International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 8, 212-214
Aug 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

मोनिका घुल्ला
सहायक प्रो. हिंदी विभाग,
डी. ए. वी कॉलेज, अबोहर।

हिंदी साहित्य में नारी विमर्श का मूल्यांकन

मोनिका घुल्ला

सारांश
साहित्य समाज का दर्पण होता है।तथा रचनाकार इस सामाजिक दर्पण में अपने सोच के रंगों की तस्वीर बनाता है। साहित्य भी नदी के समान कलकल करता बहता जाता है।रचनाकार भी नदी के प्रवाह के समान बहता जाता है। साहित्य के सन्दर्भ में 'विमर्श' संकल्पना आधुनिक काल की देन हैं ! विगत दो दशकों से यह संकल्पना मीमांसा में प्रयुक्त मिलती हैं। वस्तुतः 'विमर्श' को केन्द्र में रखते हुए साहित्य जगत् में स्त्री विमर्श जो चिंतन मनन का विषय बन गया है! वस्तुतः इसमें नारी की 'अस्मिता' की पहचान, 'स्व' की चिन्ता, 'अस्मिता बोध' और अधिकार जताने और बतलाने का विचार चिंतन है।कृष्णा सोबती, उषाप्रियवंदा, मन्नू भण्डारी, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, निरूपमा सोबती, मालती जोषी और मैत्रेयी पुष्पा आदि हिंदी लेखिकाओं ने बड़े वैचारिक ढ़ग से नारी विमर्श को उद्घाटित किया है। आने वाली पीडी इन उपन्यासों से मार्गदर्शन करके इसी अन्दोलन को अग्रसर करेगी तथा नारी सशक्तिकरण की सारिता को प्रबल प्रवाह मिलेगा तथा हिन्दी साहित्य इसमें अपनी सफल एवं सार्थक भूमिका अदा कर रहा है।नारी विमर्श को बढ़ावा देने में हिंदी साहित्यकारों का अमूल्य योग्दान है।
मुख्य पेपर–साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है, अर्थात् जैसी परिस्थितियाँ एवं हालात समाज में व्याप्त हैं, साहित्य भी उसी की झलक हमें यर्थाथमयी तरीके से दिखाता है। साहित्य भी नदी के समान कलकल करता बहता जाता है और उसके रचना भण्डार रूपी जल में हम तत्कालीन समाज के वातावरण को जान सकते हैं। वस्तुतः एक रचनाकार अपने युग का परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता और वास्तविकता का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में चित्रांकन करता है या उससे स्वभावतः ही हो जाता है।साहित्य के सन्दर्भ में 'विमर्श' संकल्पना आधुनिक काल की देन हैं ! विगत दो दशकों से यह संकल्पना मीमांसा में प्रयुक्त मिलती हैं! विमर्श शब्द मूलतः गहन सोच विचार, विचार विनिमय तथा चिन्तन मनन को द्योतित करता है! भोलानाथ तिवारी जी के अनुसार विमर्श का अर्थ है– '' तबादला–ए– ख्याल,परामर्श,मशविरा,राय–बात,विचार विमर्श,सोच विचार! '' वस्तुतः 'विमर्श' को केन्द्र में रखते हुए साहित्य जगत् में स्त्री विमर्श जो चिंतन मनन का विषय बन गया है।
वर्तमान समय में स्त्री को लेकर तथा उसके स्वरूप एवं व्यक्तित्व में आते परिवर्तन को लेकर भी बहुत सी रचनाएँ लिखी जा चुकी हैं तथा लिखी जा रहीं हैं। सदियों से पीडित, दमित तथा शोषित नारी के बदलते स्वरूप एवं भूमिका ने ही नारी विमर्श को जन्म दिया और यही विषय अब साहित्य में तूल पकङ रहा है।फलतः स्त्री–विमर्श से भाव है समाज में पहले स्त्री की स्थिति और बदलते हालातों में नारी की भूमिका और भूतकाल तथ वर्तमान समय में उसमें क्या अन्तर आया है। स्त्री–विमर्श शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी के शब्द ष्मिउंसमष् से हुई है, जिसका अर्थ है–स्त्री या स्त्री संबंधी।
स्त्री को अपने अस्तित्व के बोध ने विर्मश की प्रेरणा दी। सर्वस्व समर्पण तथा पुरूष की अधीनता एवं एकाधिकारशाही के माहौल से नारी को बाहर निकालने का श्रेय स्त्री–विमर्श को ही देना पडेगा। जहाँ 'मैं' की चिंता का अहसास है; समझना चाहीए कि वहाँ से ही नारी विर्मश का आरम्भ है। वस्तुतः इसमें नारी की 'अस्मिता' की पहचान, 'स्व' की चिन्ता, 'अस्मिता बोध' और अधिकार जताने और बतलाने का विचार चिंतन है। वस्तुतः स्त्री विमर्श समकालीन विचार चिंतन है। समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श को पूर्ण अभिव्यक्ति मिली है। साहित्य में सामाजिक चेतना और रचनाकार का निजी व्यक्तित्व दोनों समन्वित रहते हैं। साहित्यकार की दृष्टि समाज के समग्र शरीर पर रहती है। हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचंद युग तक आते–आते नारी जीवन से सम्बन्धित समस्याएँ अपनी पूर्णता के चित्रित होनी प्रारम्भ हो गयी थी ! स्वयं 'प्रेमचंद जी' ने नारी के त्याग, श्रद्धा, के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को वाणी दी है– '' मैं प्राणियों के विकास में नारी को श्रेष्ठ समझता हूँ ! प्रेम, त्याग, और श्रद्धा हिंसा, संग्राम और कलह से श्रेष्ठ है....स्त्री पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है जितना प्रकाश अन्धेरें से इसके साथ महिला उपन्यासकारों ने भी अपने औपन्यासिक कृतियों के द्वारा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन किया है। उन्होंने एक ओर से जहाँ सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा विशुद्ध रूप से मानवीय धरातल पर की है, वहीं दूसरी ओर पूर्वयुगीन जर्जर रुढ़िगत मूल्यों का खुलेरूप में बहिष्कार किया है।सजीव व्यक्तित्व वाले नारी–पुरुष संबंधों के वास्तविक तनाव, लगाव और उन्हें निर्धारित करने वाले दवाब को कृष्णा सोबती, उषाप्रियवंदा, मन्नू

Correspondence
मोनिका घुल्ला
सहायक प्रो. हिंदी विभाग,
डी. ए. वी कॉलेज, अबोहर।

भण्डारी, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, निरूपमा सोबती, मालती जोषी और मैत्रेयी पुष्पा आदि ने बड़े वैचारिक ढ़ग से उद्घाटित किया है। नारी संबंधी लेखनी ने नारी के विविध रूप दिखाये है।स्त्री विमर्श लेखन में कृष्णा सोबती ने बड़े धमाके से प्रवेश किया।कृष्णा सोबती के लेखन में मानवीयता,वैयक्तिकता,एकांगिकता और साहसिकता जैसी विशेषताएँ उल्लेखनीय है।इन्ही विशेषताओं के कारण स्त्री–विमर्श में उनका नाम बड़े सम्मान से स्मरण किया जाता है।वास्तव में पुरुषप्रधान समाज में नारी को अपनी पहचान बनाना और अपने आत्मसम्मान बनाये रखना काफी मुश्किल है।लेकिन कृष्णा सोबती ने अपनी प्रतिभा और आत्मविश्वास के बल पर हिंदी साहित्य क्षेत्र में अपना स्थान अनायास ही बनाया है।उनकी रचनाएं महिला लेखन के लेबुल के बिना ही पहचानी जाती है।महिला लेखन शब्द से वे सहमत भी नहीं है।उनके अनुसार लेख एक बड़ा अनुशासन है,इसे महिला लेखन के छोटे चौखटे में कैद नही किया जा सकता।हिंदी साहित्य के क्षेत्र में कृष्णा सोबती की सफलता एक उपन्यास लेखिका के रूप में है।इसके इलावा इनका सम्पूर्ण लेखन प्रशंसनीय है।इनके अनुसार स्वतंत्रता का अधिकार प्रत्येक व्यक्ति का है।चाहे वह स्त्री हो या पुरूष।उनके लेखन के अनेक पात्रों में स्त्री विमर्श की अनुगूंज मुखरित होती है।

19 वी शती के राजनैतिक हलचलों के वातावरण से जुड़े 'डार से बिछुड़ी' उपन्यास में सोबती ने परम्पराओं और रूढ़ियों से जकड़ी असहाय नारी का मर्मस्पर्शी चित्र उठाया है।पुरुष मेधा समाज में नारी पूर्ण रूप से पुरुष की दया पर निर्भर रहती है।इसलिए पति की मृत्यु हो जाने पर पाशो बेघर हो जाती है। है।आलोच्य उपन्यास स्त्री विमर्श लेखन में अपने उचितोचित स्थान का जयघोष करता है।क्योंकि नारी की दुदर्शाओं का सही मार्मिक आकलन द्वारा पाठकीय संवेदना को उभारने में और नारी जीवन की घिरी मजबूत दीवारों पर दरारें डालने में कृष्णा सोबती के इस उपन्यास के जरिये असाधारण सफलता प्राप्त हुई है॥ सफलता प्राप्त हुई है।

'मित्रो मरजानी' कृष्णा सोबती का बहुचर्चित उपन्यास है।पंजाब के ग्रामीण परिवेश के एक संयुक्त परिवार में घटित होने वाले झगड़े–फिसाद, प्यार–महोब्बत, रोना–हँसना आदि के यथार्थ चित्रण के साथ एक प्रतिनिधि नारी की सहानुभूतिपूर्ण कहानी भी है और उपन्यास भी।इस उपन्यास की नायिका मित्रो इस परम्परागत समाज के विरूद्ध संघर्ष करती है।उन्होने मित्रो के रूप में भारतीय नारी का अलग रूप का साक्ष्यांकन किया है।मित्रो ने पुरुष वर्चस्वता के आगे कभी अपनी इच्छाओं का दमन नही किया।उन्हें पूर्ण करने का प्रयास किया है।कृष्णा सोबती ने मित्रो के रूप में साहसी नारी का प्रत्यंकन किया है।मित्रो के चरित्र के माध्यम से उन्होने नारी विमर्श के संदर्भों को परिवर्तित कर दिया है।स्त्री विमर्श का अभिप्राय केवल स्त्री की दयनीय स्थिति का चित्रांकन ही नही है,अपितु नारी के संघर्षरत,सकारात्मक रूप का वर्णन करना भी है।'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यास में कृष्णा सोबती ने सेक्स का खुलकर चित्रण किया है।सोबती ने एक नारी के असफल संभोगों चित्रण करने में अद्वितिय साहस दिखाया है।तथा एक पुरुष के द्वारा ही रत्ती का इलाज दिखाकर पुरुष सत्तात्मक समाज के नियमों पर पुरुष के द्वारा ही प्रहार दिखाकर स्त्री विमर्श को नव्य मोड़ व नूतन दिशा का मार्ग दिया है।"कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यासों में आधुनिक समाज की पुराने विचारों की चादर में छिद्र किये है।उन्होने अपने 'डार से बिछुड़ी', 'मित्रों मरजानी', 'समय सरगम', और 'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यासों में समाज के दर्दनाक खौफनाक पर्दों को अनावृत्त किया है।

हिंदी साहित्य के महान लेखक मैथिलीशरण गुप्त जी ने भी नारी के अबला रूप का वर्णन किया है। अबला कहकर पुरुष ने उस पर अधिकार जमा लिया और उसके मन में यह धारणा दृढ़ हो गयी कि लड़की होना अभिशाप है! अतः वह अपनी दुःस्थिति से सामंजस्य कर लेती है तथा अपने पर किये जानेवाले अन्याय, अत्याचारों को चुपचाप सहन कर लेती है ! राष्ट्रकवि 'मैथिलीशरण गुप्त जी' नारी की इसी दयनीय स्थिति का चित्रांकन करते है–

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी !

लेकिन यह अबलापन केवल शारीरिक है, मानसिक एवं बौद्धिक धरातल पर वह किसी पुरुष से कम नही है ! अपने पति को हँसी के साथ तिलक लगाकर रणभूमि में भेजने वाली अबला नही, युद्ध भूमि में वीरता के साथ अपने पति की रक्षा करने वाली कैकेयी अबला नही, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई अबला नही, वह तो आज भी गौरवांगिनी है ! 'सुभद्रा कुमारी चौहान जी' ने उसके इसी गौरव का गान किया है–

बुंदेले हरबोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी !

समकालीन उपनयासों में केवल स्त्री लेखिकाओं के उपनयासों में ही नहीं बल्कि पुरूष उपन्यासकारों की रचनाओं में स्त्री– विमर्श की झलक दिखाई पडती है। स्त्री को स्वंय के बारे में बताने तथा उसकी शक्ति की पहचान करवाने में पुरूष उपन्यासकार भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। जिसमें अमृतलाल नागर का 'नाच्चयौ बहुत गोपाल', शिव प्रसाद सिंह का 'शैलूष', संजीव का 'धार', सुरेंन्द्र वर्मा का 'मुझे चाँद चाहिए' आदि द्रष्टव्य है। नारी चाहे सर्वण हो या दलित, अपमान और शोषण उसे दोनों स्थितियों में सहना पडता है अर्थात उसे एक स्त्री होने के कारण इन सब हालातों तथा दबावों का सामना करना पडता है। लेकिन अब समय ने करवट बदली है एवं उसे इसका अहसास होने लगा है। वह अब मौन, भूक तथा शान्त न रहकर मुखर होने लगी है। वह अपने प्रति अपनी अस्मिता और सम्मान के लिए जागरूक हो गयी है और अपनी पृथक पहचान बनाने और अपनी भूमिका के महत्व को विश्व के समक्ष उजागर करने हेतु प्रयासरत है।देता। शिव प्रसाद सिंह के 'शैलूष' उपन्यास की नायिका सावित्री ने इन्हीं विचारों को स्पष्ट किया है। सावित्री अपने परिवार वालों के विरूद्ध जाकर नट युवक से शादी करती हैं और वह यह भी मानती है कि यदि उसकी शादी उसके पिता जगदीश शर्मा करते तो वह भी अपनी सहेली गायत्री के जैसे घर रूपी पिंजरे में ही रह जाती। उसके कथन तथा विचार स्त्री–विमर्श की पुरजोर पहल करते हैं। वास्तविकता यह कि स्त्री को अब अपनी बेवशी एवं मजबूरी का अहसास होने लगा है और वह अपने को मजबूर करने वाले पुरूष या पति के खिलाफ बोलने लगी है। पुरूष अगर पत्नी का त्याग कर दूसरी स्त्री से शादी कर सकता है तो मैं क्यों ना करूँ यह विचार भी उसमें बढता जा रहा है।

आत्मनिर्भरता की हिमायत स्त्री–विमर्श का एक अभिन्न अंग है। स्त्री का जितना शोषण आत्मनिर्भरता के अभाव में हुआ है उतना आत्मनिर्भरता होने से दिखाई नहीं देता। वस्तुतः स्त्री की सारी स्वतन्त्रता उसके आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भरता होने पर निर्भर करती है । 'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा विशिष्ठ इसी विचार की कायल है। इसी कारण वह अपने भाई द्वारा विवाह की बात ठुकराती है और अपने पाँव पर खडे होने की बात करती है। वह कहती है कि उसे आर्थिक दृष्टि से स्वयं पूर्ण बनाना है। उसे अपात्र जीवन साथी को ढोना अमान्य है। वह कहती है कि किसी कुपात्र के साथ बंधने से अच्छा है कि वह अकेले रह ले। वर्षा के इस कथन में नारी विर्मश का केन्द्रीय भाव अभिव्यक्त होता है। वर्षा के चरित्र द्वारा उपन्यासकार नारी शक्ति का बखान करता है जो नारी उत्थान, नारी की अस्मिता ,आत्मनिर्भता और उसके अस्तित्वबोध को प्रस्तुत करती है।

स्त्री–विर्मश के प्रभाव स्वरूप महिला वर्ग में कुछ ऐसे पात्र भी दिखाई देते हैं जिनमें आत्मनिर्भरता की चेतना के फलस्वरूप हर मामले में स्वंय पूर्ण बनने की धारणा विकसित होने लगी है। आज स्त्री–विर्मश से प्रभावित नारी को होम सांइस से ज्यादा कराटे सीखने की आवश्यकता अधिक प्रासंगिक लगती है। मृदुला मर्ग के 'काठगुलाब' की असीमा अपनी सहेली को होम सांइस की अपेक्षा

कराटे सीखने को अधिक जरूरी मानती हैं। वह कहती हैं, "मर्दों की दुनिया में रहने के लिए कराटे सीखने की जरूरत है।" असीमा की उक्त बात न सिर्फ नारी–विर्मश को स्पष्ट करता है बल्कि नारी को वर्तमानकालीन युग के अनुरूप स्वंय को ढालने के लिए सावधान भी करता है।विचार शक्ति के बल पर अन्याय का विरोध करने लगी है। यही नहीं अपने जीवन के फैसले वह स्वंय कर रही है। वह अब पुरूष या भाग्य के भरोसे खुद को नहीं छोड रही है। प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' में इसका चित्रण मिलता है। पहले की तरह घुट–घुटकर मरना अथवा आँसू बहाते रहना आज की स्त्री को पसन्द नहीं आता। समाज में स्थित नारी–पुरूष के दोहरे मापदण्ड अब उसे सहनीय नहीं है। अब वह दब्बू नहीं रहकर दबंग व्यक्तित्व में उभर रही है। नारी को यह अहसास हो गया है कि वह सामाजिक विकास में पुरूष से अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, तथा सामाजिक दायित्व स्त्री होने के नाते वह जिस क्षमता से वहन कर रही है उस क्षमता से पुरूष कभी वहन नहीं कर सकता।

इस प्रकार हिंदी साहित्य में नारी–चर्चा पर्याप्त मात्रा में मिलती है। स्त्री चेतना के विकास का मूल्यांकन हिंदी साहित्य में गति पकड़ चुका है।स्त्री पात्रों के माध्यम से नारी को परख करने का साहस प्रदान करने में हिंदी साहित्यकारों का अमूल्य योग्दान है। सही–गलत; अच्छा–बुरा तथा वैध–अवैध की व्याख्या सदियों से पुरूष करते आये हैं लेकिन अब स्त्री को पुरूष द्वारा रचित शास्त्रों में क्या उचित एवं क्या अनुचित है, इसकी चिन्ता नहीं। अब समाज में ऐसी नारियाँ दिखाई दे रही हैं जो किसी न्यायग्रस्त नारी का साथ देने में नहीं हिचकिचाती। परन्तु इसमें अधिकतर उपन्यास नारी द्वारा लिखे हुए मिलते हैं; किन्तु पुरूषों द्वारा लिखे गए उपन्यासों में भी नारी चिन्तन एवं नारी अस्मिता की अभिव्यक्ति दिखाई देने लगी है। अतः स्त्री–विर्मश स्त्री की अस्मिता का, आत्मचेतना का, अन्याय के विरोध का, अस्तित्वबोध का और उसका अत्याचार के विरोध में खडे रहने की लडाकू वृति का न केवल परिचय देता है अपितु इस चिन्तन को बल प्रदान करता है। आने वाली पीडी इन उपन्यासों से मार्गदर्शन करके इसी अन्दोलन को अग्रसर करेगी तथा नारी सशक्तिकरण की सारिता को प्रबल प्रवाह मिलेगा तथा हिन्दी साहित्य इसमें अपनी सफल एवं सार्थक भूमिका अदा कर रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. विमर्श के विविध आयाम– आशोक चव्हाण(वाणी प्रकाशन दिल्ली)
2. नारी उत्पीडन– समस्या एवं सामाधान–डॉ हरिदास राम जी शैण्डे सुदर्शन(ग्रंथ विकासजयपुर)
3. 3ण्नारी अस्मिता की परख– डॉ दर्शन पाण्डेय (समय प्रकाशनदिल्ली)'
4. नारी विमर्श,आधी दुनिया का जलता संविधान,डॉ .बलदेव वंशी,लोकवाणी संस्थान दिल्ली
5. आदमी की निगााह में औरत,राजेन्द्र यादव
6. मित्रो मरजानी उपन्यास,कृष्णा सोबती,राधा कृष्णन प्रकाशन
7. समय सरगम उपन्यास,कृष्णा सोबती, राधा कृष्णन प्रकाशन
8. सूरजमुखी अंधेरे के,कृष्णा सोबती, राधा कृष्णन प्रकाशन